विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत विषयशिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: 20-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित)

- श्लोक 6

  अयि चल बंधो! खगकुलकलरव गुञ्जितवनदेशम् ।
  पुर-कलरव सम्भ्रमितजनेभ्यो धृतसुखसन्देशभम्।।
  चाकचिक्यजालं नो कुर्याज्जीवितरसहरणम् ।शुचि....।।

- चल –चलो ,बन्धो!-हे मित्र , खगकुलकलरव - पक्षियों के समूह की आवाज से, गुञ्जितवनदेशम् – गुंजायमान वन के स्थान को, पुर-कलरव –नगर के कोलाहल से ,सम्भ्रमितजनेभ्य:-भ्रमित लोगों के लिए ,धृतसुखसन्देशम् -धैर्य के सुख सन्देश ,न:-हमारे चाकचिक्यजालम् –चकाचौंध के जाल को , जीवितरसहरणम् – जीवन के रस का हरण

- सरलार्थ

  हे मित्र(बंधु/ भाई) पक्षियों के समूह की आवाज से गुंजायमान वन में चलो नगर की आवाज(कोलाहल) से परेशान लोगों को धैर्य के सुख का संदेश दो । नगरों की चकाचौंध भरी दुनिया कहीं हमारे जीवन के रस का हरण न कर ले। इसलिए शुद्ध पर्यावरण ही हमारा शरण है